टेलीपैथी साधना रहस्य

08/02/2015 PRADEEP GOSWAMI टिप्पणी करे

परामनोविज्ञान के वैज्ञानिकों ने मानव मस्तिष्क में छुपे हुए रहस्यमयी शक्तियों पर शोध करते हुये पता लगाया कि मनुष्य के अवचेतन मन मे अलौकिक, अविश्वसनीय और अकल्पनीय शक्तियां विद्यमान है।
यदि अवचेतन मन की उन शक्तियों को योग आदि क्रियाओं के द्वारा जागृत कर लिया जाय तो अनेकानेक कौतुकमयी चमत्कार खुद ब खुद होने लगते हैं जैसे- किसी व्यक्ति के जीवन के गुप्त रहस्यों का पता लगना, मन की बात जान लेना, किसी भी व्यक्ति से मिलते ही उस व्यक्ति के भुत, भविष्य तथा वर्तमान की जानकारी प्राप्त कर लेना या उसके साथ घटने वाली घटनाओं को स्पष्ट देख लेना इत्यादि क्रियायें साधक के जीवन में आकस्मीक होने लगती हैं। ऐसी चमत्कारिक घटनाओं को अतिंद्रिय शक्ति का चमत्कार कहा जाता है।
वैज्ञानिक शोध

अमेरिकी मनोवैज्ञानिकों ने मस्तिष्क में उठ रही तरंगों पर काफी शोध किया फलस्वरूप वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि मन के अन्दर की अवचेतन मन को यदि क्रियाशील बनाया जाय तो बीना किसी आधुनिक उपकरणों तथा बीना किसी संचार माध्यमों के भी मन के तरंगों को पढ़ कर किसी भी व्यक्ति के मन के रहस्यों को जाना जा सकता है, तथा एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति के मन पर अपना प्रभाव डाल सकता है और उसे अपने मनोकुल कार्य करने को बाध्य कर सकता है।
इसी आधार पर मनो वैज्ञानिकों ने अतिंद्रिय शक्तियों से सम्पन्न व्यक्तियों पर परिक्षण कर पता लगाया कि मनुष्य के मस्तिष्क में विचार उत्पन्न होते ही सारे आकाश मंडल में अल्फा तरंगों के रूप मे फैल जातीं है जीसे कोई भी व्यक्ति अपने अंर्तमन को जाग्रत कर उन अल्फा तरंगो को पकड़ कर किसी भी व्यक्ति के मन मे उठ रहे विचारों को पढ़ सकता है अथवा हजारों किलोमिटर दुर घट रही घटनाओं को स्पस्ट रूप से देख सकता है तथा भुत भविष्य तथा वर्तमान काल मे भी प्रवेश कर भुतकाल की जानकारी तथा भविष्य में घटने वाली घटनाओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।
प्राचीन योग शास्त्रों के अनुसार ध्यान साधना के द्वारा अतिंद्रय शक्तियों को जगाकर मानसिक शक्तियों के माध्यम से दुर दृष्टि, दुरबोध, विचार संप्रेषण एवं भुत भविष्य तथा वर्तमान दर्शन इत्यादि कार्य संपन्न किये जा सकते हैं।
कैसे करें ध्यान साधना

ध्यान का सीधा-सीधा संबंध मन से है। मनुष्य के अन्दर दो प्रकार का मन होता है
एक बाह्यमन तथा दुसरा अंर्तमन।
अंर्तमन की अपेक्षा बाह्यमन का स्वभाव अत्यंतचंचल तथा कुटिल है जीसमे काम क्रोध, लोभ, अहंकार, इ्र्ष्या, राग, द्वेष, छल, कपट इत्यादि विकार उत्पन्न होते रहते हैं जो मुख्य रूप सेमनुष्य के पतन का कारण है। बाह्यमन हमेशा व्यक्ति को बुरे कर्मों के लिए प्रेरित करता है।
अंर्तमन का स्वभाव है शांत निर्मल और पवित्र जो मनुष्य को हमेशा अच्छे कार्यो के लिए प्रेरित करता है इसी मन के अन्दर छुपी होती है अलौकिक दिव्य और चमत्कारिक शक्तियाँ। बाह्यमन जब सुप्तावस्था में होता है तब अंर्तमन सक्रिय होने लगता है और इसी अवस्था को ध्यान कहा जाता है।

मन को बेलगाम घोड़े की संज्ञा दी गई है क्योंकि मन कभी एक जगह स्थीर नही रहता तथा शरीर की समस्त इद्रियों को अपने नियंत्रण में रखने की कोशिस करता है। मन हर समय नई – नई इच्छओं को उत्पन्न करता है।

एक इच्छा पूरी नही हुई कि दुसरी इच्छा जागृत हो जाती है। और मनुष्य उन्ही इच्छाओं की पुर्ति की चेष्टा करता रहता है। जिसके लिए मनुष्य को काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, पीड़ा इत्यादि से गुजरना पड़ता है। इसके बावजुद भी जब मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति नही हो पाती तब मन में क्लेश तथा दुख होने लगता है। यदि मन को किसी तरह अपने वश में कर एकाग्रचित कर लिया जाय तब मनुष्यकी आत्मोन्ती होने लगती है तथा समस्त प्रकार के विषय विकारों से उपर उठने लगता है और अंर्तमन में छुपे हुये उर्जा के भंडार को जागृत कर अलौकिक सिद्धियों का स्वामी बन सकता है।

मन को करे वश में

मन को नियंत्रित करना थोड़ा कठिन है परंतु कुछ प्रयासो के बाद मन पर पूर्ण रूप से नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है। मन को साधने के लिए शास्त्रों में अनेकों प्रकार के उपाय हैं जिसमे से सबसे आसान तरीका है ध्यान साधना ध्यान के माध्यम से कुछ ही दिनों या महिनो के प्रयास से साधक अपने मन पर पूरी तरह नियंत्रण रखने में समर्थ हो सकता है क्योंकि शास्त्रों में ध्यान को मन की चाबी कहा गया है। ध्यान साधना से मन के सारे विकार धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं, तथा अंर्तमन जागृत तथा चैतन्य होने लगता है।

मन की एकाग्रता धीरे-धीरे बढ़ने लगती है। मनुष्य के शरीर की सुप्त शक्तियाँ जागृत होने से शरीर पूर्णतः पवित्र निर्मल तथा निरोग हो जाता है।

ध्यान साधना प्रयोग

सर्व प्रथम साधक ब्रह्ममुहूर्त मे उठकर स्नान

आदि क्रियाओं से निवृत होकर अपने पूजा स्थान

अथवा किसी निर्जन स्थान में प ùासन, सिध्दासन

या सुखासन में बैठ कर ध्यान लगाने का प्रयास करे,

ध्यान लगाते समय अपने सबसे पहले अपने आज्ञा चक्र

पर ध्यान केद्रित करे तथा शरीर को अपने वश मे रखने

का प्रयास करें बिल्कुल शांत निश्चल और स्थीर रहें,

श्रीर को हिलाना डूलना खुजलाना इत्यादि न करें।

तथा नियम पुर्वक ध्यान लगाने का प्रयास करें।

ध्यान साधना के तीन आयाम

सर्वप्रथम साधक जब ध्यान लगाने की चेष्टा करता है

तब मन अत्यधिक चंचल हो जाता है तथा मन में

अनेकों प्रकार के ख्याल उभरने लगते हैं। साधक विचार

को जितना ही एकाग्र करना चाहता है

उतनी ही तिव्रता से मन विचलित होने लगता है

तथा मन में दबे हुए अनेकों विचार उभर कर सामने आने

लगते हैं इस लिए ध्यान साधना को तीन आयामों में

विभक्त किया गया है।

1 विचार दर्शन

2 विचार सर्जन

3 विचार विसर्जन।

विचार दर्शन:- साधक को चाहिए कि जब ध्यान

लगाने बैठे तब मन में जो विचार उत्पन्न हो उसे होने दें

विचारो को आने से न रोकें न ही विचारो को दबाने

की चेष्टा करे। मन में विचार लाना नही है और न

ही विचारों को आने से रोकना है, केवल दृष्टा बन कर

विचारों को देखते रहना है।

मन एक विचार से दुसरा विचार दुसरे से तीसरा इस तरह से अनेको प्रकार के विचार घटना, दुर्घटना, वास्तविक तथा काल्पनीक अनेकों विचार मन में उत्पन्न होते रहेंगे परंतु आपको उन विचारों में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने की जरूरत नही केवल दृष्टा बनकर आप देखते जाइये कि मन किस प्रकार कल्पना लोक में उड़ान भर रहा है। ऐसा करने से धीरे-धीरे आपके विचारों में कमी आने लगेगी और विचार स्थीर होने लगेंगे।

विचार सर्जन:- इस क्रिया में

साधक को अपनी आँखे बंद कर मन को आज्ञाचक्र पर कुछ देर तक केद्रित करने का प्रयास करना चाहिए तत्पश्चात मन मे कोई विचार लाए और कुछ देर तक उस पर ध्यान को केद्रित करें और उस विचार को मन से हटा दें तथा पुनः दुसरा विचार लाएं और उस पर

भी कुछ देर तक

ध्यान केंद्रित कर उसे भी मन सें हटा दें। इस तरह मन में अलग-अलग विचारों को लाते रहें तथा कुछ देर तक

उसपर अपना ध्यान केंद्रित कर उसें हटाते जायें। इस तरह करते रहने से धीरे-धीरे मन थकान अनुभव करने लगेगा और कुछ देर के लिए कुछ सोंचना बंद कर देगा,

आपको ऐसा लगेगा कि मन आराम करना चाह रहा है।

धीरे-धीरे आप देखेगे कि मन आपके काबु मे हो ने लगेगा तथा विचार शुन्य होने लगेगा।

विचार विर्सजन:- साधक अपनी आँखे बंद कर धीरे-धीरे गहरी श्वांस ले और धीरे-धीरे छोड़े कुछ देर बाद मन में कोइ विचार आने दें। जैसे ही मन में कोइ विचार आता है उसे तुरंत अपने मन से हटा दें, फिर मन में कोइ विचार आये उसे भी हटा दें, इस तरह मन मे उठने वाले सभी विचारो को मन से हटाते जाएं

ऐसी क्रिया को हि विचार विर्सजन कहा जाता है।

इस क्रिया मे साधक को चाहिए कि मन मे उठने वाले विचारों को न रोकें बल्कि उन विचारों को मन से हटाने का प्रयास करते रहना चाहिए। इस प्रकार से अभ्यास करते रहने से मन निर्विकार तथा निर्विचार

होने लगता है और विचार शुन्य की स्थिती बनने लगती है तथा अर्तमन के जागृत होने से अलौकिक एवं चमत्कारिक   दृष्य तथा घटनाएं ध्यान की अवस्था में दिखाई देने लगते हैं।

ध्यान की अवस्था में टेलिपैथी

जब साधक का मन एकाग्रचिŸा होने लगे तब टेलीपैथी का प्रयोग प्रारंभ करना चाहिए। इसके लिए सबसे पहले अपने गुरू या इष्ट से प्रत्यक्ष अथवा ध्यानावस्था में मानसिक अनुमति ले कर प्रयोग करना चाहिए।

सर्वप्रथम अपने इष्ट या गुरू की प्रतिमा अथवा चित्र को अपने पूजा स्थान में इस प्रकार रखें ताकि वह आँखों के ठीक सीध में तथा ढाई फीट की दुरी में रहे। फिर उसपर अलपक दृष्टि से देखने का प्रयास करें। इस प्रक्रिया को त्राटक कहा जाता है। त्राटक का अभ्यास किसी बिंदु, शक्ति चक्र, क्रिसटल बाल, दीपक की लौ, चंद्रमा, तारा अथवा सुर्य पर बारी-बारी से अभ्यास किया जाता है। जिसके

द्वारा साधक के आँखों में अद्भुत सम्मोहन शक्ति आने लगती है, तथा साधक को सम्मोहन के क्षेत्र में पूर्णं सफलता प्राप्त हो जाती है।

परंतु टेलिपैथी के लिए अपने इष्ट अथवा गुरू के चित्र पर त्राटक का अभ्यास करना चाहिए। प्रारंभ में त्राटक का अभ्यास करने पर ज्यादा देर तक अपलक टकटकी लगाकर देख पाना संभव नही इसलिए धीर धीरे प्रयास करते हुए समय को बढ़ाते जाएं।

जब आँखों में आंसु आने लगे तब कुछ देर के लिए आंखों को विश्राम दें तथा आंखों पर ठन्डे पानी का छिटा मारें फिर अभ्यास करें इस तरह जब 10-15 मिनट का अभ्यास होने लगे तब उस तस्वीर में आपको अजीब सा नीला प्रकाश निकलता हुआ दिखाई देगा जिसकी रोशनी आखों में समाहित होती हुई नजर आएगी। जब इस तरह के दृष्य नजर आने लगें तब समझ लीजिए कि आप सफलता के काफी करीब हैं। फिर अपनी आँखों को बंद कर लें ऐसा करने के बाद भी आपको वह चित्र दिखाई देती रहेगी।

अब आप उस चित्र के मस्तिष्क में अपना ध्यान केंद्रित

करने का प्रयास करें। ऐसा करते ही आपको अहसास

होगा कि आप अपने गुरू के मानसिक

तरंगों को भलीभांति देख पा रहे हैं, तथा उनसे

वार्तालाप करने का प्रयास करने लगे हैं।

जब अपने गुरू या इष्ट से किसी प्रकार के

प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होने लगे तब

किसी भी व्यक्ति के चित्र पर त्राटक करते हुए

अपनी आँखों को बंद कर उसका प्रतिबिम्ब अपने

आँखों मे उतार लें फिर ध्यान करते हुए उसके मस्तिष्क में

उठने वाली तरंगों को पकड़ने का प्रयास करें इस तरह

धीरे-धीरे आप लोगों के मस्तिष्क के तंरगों को अपने

मस्तिष्क के तरंगों से जोड़ने में सक्षम हो पायेंगे। जब

आप मन के तरंगों को पकड़ने में अभ्यस्त हो जाएंगे तब

आपको किसी भी व्यक्ति का चित्र

अथवा मूति की आवस्यकता नही पड़ेगी। आप स्वतंत्र

रूप से किसी भी व्यक्ति के मन के तरंगों को पढ़ पाने में

सक्षम हो जायेंगे चाहे वह मनुष्य आपके पास

हो अथवा कितना भी दुर हो।